REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

शेखरजोशी की कहानियों में संवेदना के विविध आयाम

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि0 प्रो0, हिंदी , आर्य महिला पी.जी. कालेज शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

मानव जीवन के हर क्षेत्र में अपना अस्तित्व कायम रखना चाहता है। वह समाज मे जितना अधिक लगाव रखना चाहता है, उतना ही जीवन क्रम उसे समाज से अलग कर देता है। संबंध हमारी सामाजिकता को अभिव्यक्त करते हैं। संवेदना में परिवर्तन का सबसे पहला और गहरा प्रभाव संबंधों पर होता है। आज की प्रत्येक कहानी संबंधों से शुरू और संबंधों से समाप्त होती है। इस अर्थहीनता की अनुभूति की अभिव्यक्ति कथाकार शेखर जोशी की कहानियाँ 'बंद दरवाजे' एवं 'खुली खिड़कियाँ' में देखी जा सकती है।

शिल्प और संवेदना की दृष्टि से शेखरजोशी की कहानियाँ पाठक को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट करती हैं और पाठक के मन में संवेदना जगाती हैं। डॉ.सुरेंद्र चौधरी के अनुसार–''कहानी का मर्म तभी खुलता है जब कहानीकार रचना प्रक्रिया में इस लक्षण संयोग के लिए कहानी में पर्याप्त भूमि बना लेता है। अथवा पात्र के अंतःकरण की द्रव्य दशाओं का सूक्ष्मता से उत्थापन करने में समर्थ होता है इन दोनों शर्तों के अभाव में इस द्विरूप प्रतिक्रिया को किसी भी प्रकार संश्लिष्ट नहीं किया जा सकता ।''[1] शेखर जोशी की कहानी 'हलवाहा' इस प्रक्रिया का सबसे अच्छा उदाहरण है, इसमें मूल पात्र की मनःस्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता से कहानी का रूप चमत्कृत हो उठता है और पात्र हमारी संवेदना को अनाशय ही प्राप्त कर लेता है।

आलोचक डॉ.नामवर सिंह के अनुसार,''आज की हिंदी कहानियों में जिन कहानियों को हम अच्छी कहानी कहते हैं वे कलाकृति के रूप में अखण्ड ईकाई हैं वे जिसे वस्तु सत्य की जीवंत कला सृष्टि है। उनमें जातीय जीव तथा व्यक्तिगत अनुभूति, परंपरागत तथा नवीन परिवर्तन, यथार्थ तथा कल्पना का आवरण आदि बहुत–सी नयी पुरानी बातों का समन्वय हो सकता है। किंतु इस समन्वय का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व वह ऐतिहासिक नवीनता है जो संपूर्ण कहानी को सार्थकता प्रदान करती है।''[2]

नवीनता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य शेखरजोशी की कहानियों में परिलक्षित होती है। शेखर जोशी की कहानियाँ जीवन की सीधी आलोचना ही नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं का अधिक से अधिक संवेदनात्मक चित्र को खिंचती है। इनकी कहानियों में नवीनता केवल शिल्पगत नहीं है इनके मूल में कहानीकार की नवीन दृष्टि है। डॉ.नामवर सिंह का यह कथन सर्वथा उचित है,''आज की कहानी की उपलब्धियों के सिलसिले में सामान्य रूप से प्रायः यह स्वीकार किया गया है कि वह पहले से कहीं ज्यादा संवेनापूर्ण और विभिन्न स्तर की अनुभूतियों से भरी हुई है। सामाजिक संदर्भ हो या प्राकृतिक यह कथन दोनों प्रसंगों मे सार्थक है। संघर्ष के सिलसिले में भी व्यक्ति की संवेदनाओं के ढांचे में परिवर्तन आता है नयी संवेदनाएं व्यक्ति और समाज की नवीन संघर्ष की सूचक होती है। इसलिए आज की हिंदी कहानी में जब नयी संवेदनाओं की उपलब्धि की बात कही जाती है तो इतना स्पष्ट है कि उनमे नवीन सामाजिक संघर्षों का उत्कृष्ट चित्रण है। इस प्रकार से यह व्यक्तियों और समुदायों के आपसी संबंधों की प्रतिक्रिया है।''[3]

शेखर जोशी की कहानियों में इन संघर्षों एवं संबंधों की पड़ताल आधुनिक जीवन–बोध एवं यथार्थ के विश्लेषण के स्तर पर हुआ हैं इस प्रकार शेखर जोशी की कहानियों में नवीन आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने

1
2
3

वाले निम्न मध्यवर्गीय व्यक्तियों की लाचारी पीड़ा, ग्लानि और जिजीविषा आदि मनःस्थितियों का कलापूर्ण मार्मिक चित्रण मिलता है। शेखर जोशी ने निम्न मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकतायें, स्त्री–पुरुष के सामाजिक संबंध की दरार और मानसिक समस्याओं को नये परिवर्तित रूप में चित्रित किया है। आपकी कहानियों में पहाड़ी जीवन शैली, नारी चरित्रों की लाचारी, बेबसी और मुक्ति की कामना बदली हुई सामाजिक रूढ़ियों की जटिलता तथा नारी की नवीन मानसिकता को उजागर करती है। शेखर जोशी की कहानी 'पदमा' में पदमा का संघर्ष तुच्छ और हीन मनोवृत्ति से है और 'सिनारियों की बूढ़ी अम्मा' इन कहानियों में नारी पात्र का अंतःकरण को उभारने की एक सफल कोशिश की गयी है।

'शेखर जोशी की कहानी 'कोसी का घटवार' में भारत का सीधा–साधा सभ्य समाज दर्शाया गया है उसकी अलग दुनिया है जिसमें वह निश्चल प्रपंचहीन जीवन व्यतीत करता है। ये कहानी मूलतः भावबोध की यथार्थवादी कहानी है। इनके पात्र बुद्धि या अनुभव के धरातल पर संवेदना के गहरे बोध को आधार बनाते है और गहरी चोट खाकर भी इतने ही गहरे मनुष्य बने रहते हैं।'[4] 'कोसी का घ्टावार' कहानी का प्रमुख पात्र गोसाई जो कभी फौज में नौकरी करता था। नारी पात्रों में प्रमुख पात्र लछना है जो एक समय गोसाई से प्रेम करती थी। दोनों एक गाँव में रहते थे। फौज में होने तथा अनाथ होने के कारण गोसाई की लछना से प्रेम होते हुए भी शादी नहीं होती है। लछना का बाप कहता है,''जिसके आगे–पीछे भाई–बहन, माई–बाप नहीं परदेश में बंदूक की नो पर जान रखने वाले को छोकरी कैसे दे दे हम।''[5] नौकरी कने के बाद गोसाई ने गाँव में आटा–चक्की खोल दी। दूसरी ओर लछना की शादी अन्यत्र कर दी जाती है। वह एक बच्चे की माँ बन जाती है और कुछ समय बाद वह विधवा हो जाती है। फ्लैश बैक शैली के माध्यम से लेखक ने पुरानी स्मृतियों को ताजा कर अपनी कथावस्तु को गतिशीलता प्रदान की है। इधर पहले की बातें भी दर्शक या पाठक के सामने उजागर होती है। कभी–कभी फिल्मों में भी फ्लैश बैक को केंद्र में रखकर अपनी कथा को उदघाटित किया जाता है। इस दृष्टि से 'कोसी का घटवार' कहानी इसका श्रेष्ठ उदाहरण है; जैसे–'' यह अकेलापन उसे मिला है..... नहीं, याद करने को मन नहीं करता। पुरानी बहुत पुरानी बातें वह भूल गया पर हवलदार साहब की पैंट की बात उसे नहीं भूलती। ऐसी ही भौजी पैंट पहनकर हवलदार धरमसिंह आया था, लांड्री की धुली, नोकदार क्रीज वाली पैंट । वैसी ही पैंट पहनने की महत्वाकांक्षा लेकर गोसाई फौज में गया था पर फौज से लौटा तो पैंट के साथ–साथ जिंदगी का अकेलापन भी उसके साथ आ गया।''[6]

गोसाई ने अपनी चक्की पर जब काफी अरसे के बाद लछमा को देखा तो पहले वह पहचान ही नहीं पाया कि वह लछमा है। एक बार तो यह भी कह दिया कि आज हम आटा नहीं पीसेंगे। मगर लछमा को पहचानकर वह हाँ करता है। उसके मानस पटल पर पुरानी स्मृतियाँ ताजा हो उठती है। वह सोचता है कि लछमा ने आँखों में आँसू भरकर गंगनाथज्यू की कसम खायी थी कि–गंगनाथज्यू की कसम जहाँ तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगी।''[7] फिर भी उन्होंने दूसरी जगह पर ब्याह कर दिया गया, अब दोनों के बीच बातें होने लगी। पुरानी बातें खुलने लगी और लछमा ने बताया कि बाबा नहीं रहें। हमारे परिवार वाले यह सोचते हैं कि मैके रहकर यह हक मागेंगी। इसीलिए मैंने अपने चाचा भतीजों को कह दिया कि मुझे पिताजी के हिस्से में से कुछ नहीं चाहिए। अपनी इस दयनीयता का बयान निम्न शब्दों में वह व्यक्त करती है–''मुश्किल पड़ने पर कोई किसी का नहीं होता, बाबा जी की जायदाद पर उनकी आँखें लगी है सोचते है कही मैं हक न जमा लू। मैं साफ–साफ कह दिया, मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं अंगलान का लीसा ठोकर अपनी गुजर कर लूँगी। किसी की आँख का कांटा बनकर नहीं रहूँगा।''[8]

यह कहानी ग्रामीण प्रवेश से ओत–प्रोत है। इस कहानी में जोशी जी ने ग्रामीण भाषा पर भी पूरा ध्यान दिया है, जैसे जरूरी जो पहले हमारा लंबर नहीं लगा दोगें। 'कोसी का घटवार' ग्रामीण प्रेम की अद्वितीय कहानी है। गोसाई और लछमा एक दूसरे से प्रेम करते हुए तथा साथ रहने की कसमें खाकर भी एक नहीं रह सके। करण गाँव में प्रेम को समझने की शक्ति कम होती है लड़कियों के रिश्ते की संपूर्ण जिम्मदारी पिता पर होती है। इसलिए दोनों की शादी नहीं हो सकी। परंतु काफी फासले के बाद जब वे मिलते हैं तो दुनिया बदल चुकी होती है। लछमा विधवा हो चुकी थी। अपने गाँव की चचेरे भाई भी इसको परेशान करते हैं। तब अपना पुराना प्रेम की वेदना को व्यक्त कर देती है। इस प्रकार लछमा और गोसाई की प्रेम की अद्वितीय रचना 'कोसी का घटवार' कहानी है।

4
5
6
7
8

शेखरजोशी की कहानियों का संवेदनात्मक धरातल मुखर और सशक्त है जोशी जी कहानियाँ या तो बेचैनी पैदा करती है या संदेह की मानसिकता। पाठक को लगता है कि बाहरी संवेदना के बावजूद वहाँ कुछ अस्वाभाविक है जो अलग ढंग के विषय उठा रहे हैं। जिस तरह के पाठक का नई कहानियों और अकहानी में सामान्यतः निर्माण किया, यह जोशी जी की रचना में यह देखकर परेशान होता है कि लेखक न तो किसी विशेष भाव दशा को रेखांकित कर रहा है जहाँ नये मूल्यों की सृष्टि हो रही है और न सब कुछ को नकारते हुए पात्र किसी अत्यातित वक्तव्य की भूमिका बना रहा है। इसके स्थान पर जोशी जी को कहानियों चालीस के दशक की तीखी कथा प्रस्तुतियों को उनके ऊपरी सामाजिक आयाम से मुक्त कराकर सांस्कृतिक मानवीय मुहावरे में व्यक्त करती है। सौंदर्यशास्त्र गठित होता है जिसे चाहे तो हम सुसंपादित वाक्य,संवाद चित्रण, रचना के सटीक प्रारंभ और अंत अथवा व्यंजना प्रधान वक्तव्य का सौंदर्यशास्त्र कह सकते है। इसके बाद जोशी जी उस राजनीतिक दृष्टिकोण को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। जिसमें परिवर्तन की वैकल्पिक परिवेश की दूरगामी संभावनाएं नज़र आती है। यह सौंदर्यशास्त्र समसामयिक आवश्यकताओं के गणित को पीछे ठेलता हुआ जोशी जी के लेखन की व्यापक अर्थवक्ता का आधार बनता है। इस अर्थ में जोशी की कहानियों किसी विशेष सामाजिक स्थिति से प्रेरित या निर्देशित रचनाएं न बनकर इतिहास के व्यापक कालखण्ड को रेखांकित सच्चाईयाँ बनती है। 'दाज्यू' कहानी में शेखर जोशी ने पहाड़ी इलाके से नगर में आये जगदीश बाबू और मदन की कहानी को चित्रित किया है जोशी की 'दाज्यू' कहानी में तीन पात्र हैं। आठ–दस साल वेटर मदन जगदीश बाबू और उनका दोस्त हेमंत। जगदीश जगदीश बाबू पहाड़ से पहली बार आये हैं अकेले हैं, शहर की चहल–पहल, शोरगुल में भी सूनेपन की अनुभूति होती है और वहाँ के लोग उन्हें अपने लगने लगते हैं। जगदीश बाबू को अनासय ही अपना गाँव साथ के लोग व गाँव की अन्य चीजें याद आने लगती है। जगदीश बाबू को कैफे में मदन के शब्द 'चाय शा बू' सुनने को मिलते है। तो उन्हें लगता है कि जैसे उनके मन की जो रिक्तता है उसकी पूर्ति हो गई। परिचय के आदान–प्रदान से पता चलता है कि जगदीश बाबू मदन के निकटवर्ती गाँव के रहने वाले हैं। मदन को अपना अतीत याद आ जाता है मदन को जगदीश बाबू के रूप में अतीत की कई छायाएं अपने निकट जान पड़ी। मदन जगदीश बाबू को 'दाज्यू' यानी बड़ा भाई मानने लगता है और उसी तरह अपनत्व से परिपूर्ण व्यवहार करने लगता है।

मदन दाज्यू शब्द को इतनी आतुरता और लगन से दोहराता है, जितनी आतुरता से बहुत दिनों के बाद मिलने पर माँ और बेटे को पुकारती और चुभती है। कुछ दिनों बाद जगदीश बाबू का एकाकीपन दूर हो जाता है और उन्हें शहर का सब कुछ अपना लगने लगता है। अब उन्हें मदन का दाज्यू –दाज्यू कहना अच्छा नहीं लगता। क्योंकि अब उनके शहरी संस्कार जाग उठे हैं। वह मदन को टोक देते हैं,''यह दाज्यू–दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन–रात। किसी के प्रेस्टिज का ख्याल भी नहीं है तुम्हें ? इस तरह अपनत्व की जो डोरी दोनों के बीच थी। वह जगदीश के इस व्यवहार के कारण टूट गयी। लेकिन मानसिक आघात से मदन टूटता नहीं, बल्कि वह और मजबूत हो जाता है। दूसरे दिन कैफे में जगदीश बाबू की भेंट अपने बचपन के सहपाठी हेमंत से होती है। हेमंत को लगता है शायद मदन पहाड़िया है। वह मदन का नाम जानना चाहता है। मदन जवाब नहीं देता। हेमंत पुनः आग्रह करता है तो मदन ने कहा–''बाय कहते है शा बू।''[9] आवेश में उसका चेहरा लाल होकर और भी सुंदर हो गया था। आकार में यह कहानी जितनी छोटी है उतनी ही गहरी और मारक भी। यह कहानी अंदर–अंदर ही हमारी संवेदनाओं को झिझोर कर हमारे बनावटीपन पर प्रश्न चिन्ह लगा देती है इसके अलावा हमे सोचने पर विवश करती है। इस प्रकार दाज्यू कहानी का कथानक पहाड़ से रोजगर की तलाश में शहर आता है और ढाबे पर काम करने लगता है। संयोगवश उसी के इलाके का बाबू जब वहाँ चाय पीने आता है तो उसे लगता है जैसे पहाड़ी जीवन का अपनत्व उसके सामने आ गया है। वह उसे रोज चाय चिल्लाता है कुछ दिन बाद उसके वास्तविक औपचारिक स्थान नाम के स्थान पर अनौपचारिक नाम लेकर पुकारता है तब वह व्यक्ति बुरा मान जाता है। इस प्रकार जोशी जी ने अपनी एकाधिक कहानियाँ में नौकरी पेशे से जुड़े मध्य वर्ग की उस मानसिकता का भी चित्रण किया है जो अपने सगे संबंधियों को उनके और अपने आर्थिक स्तरों में अंतर आ जाने के कारण अपने परिचितों के बीच अपना भाई विरादर बताना अपना समझते है।

''अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच में भाषा एक तीसरी सत्ता के रूप में स्वीकृत है। रचनाओं में भाषा मात्र संवाद का माध्यम भर नहीं होती है। इससे कुछ ज्यादा होती है वह रचना प्रक्रिया के साथ–साथ लेखक की जीवन प्रक्रिया से भी जुड़ी होती है।''[10] आम लोगों की तरह लेखक भी भाषा से ही सीखता है; लेकिन अभिव्यक्ति स्तर पर

9

10

वह भाषा अपने ढंग से अर्जित करता है। अपनी संवेदना के अनुरूप वह भाषा गढ़ता और संवारता है। इसीलिए भाषाा केवल परिवेश और पात्रों के जीवन प्रसंगों को ही प्रेषित नहीं करती,बल्कि लेखक के अंतर्लोक और अंतर्दृष्टि को भी खोलती है। लेखक का रचना संषर्घ से जुड़ा होता है। अभिव्यक्ति का संघर्ष यानी अपनी संवदेना के अनुसार भाषा की खोज करना है। मानव हृदय के भीतर बसी हर्ष,शोक, प्रेम, वात्सल की अनुभूति ही संवेदना है। इन कोमल अनुभूतियों का सीधा संबंध मानव के मन से है। कुदरत के सर्जन में मनुष्य ही अधिक भाव–प्रवण प्राणी है संवेदना का धरातल चाहे जो भी हो पर उसे अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से ही मिलती है।

आधुनिक साहित्यकारों के मानव मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति किया है। उन्होंने आधुनिक मानव की टूटन, तनाव यंत्रणाओं के साथ–साथ नारी मन की भीतरी पर्तों को भी खोला है। कहानीकार शेखर जोशी जी भी उन्हीं में से एक है जिन्होंने मानव मन को पूरी तरह समझा और परखा है। 'सीढ़ियाँ कहानी में अन्य कहानियों की भाँति कोई आग्रह या आयोजन नहीं है। लेकिन तार्किक समग्रता का वह हिस्सा है जो इस कहानी के रचनाकार के मूल संवेदना का विशिष्ट वाहक बनता है।

शेखर जोशी विचार संवेदना और कला की अन्विति के लिए प्रसिद्ध हैं। आपकी कहानियों में मुख्य से पहाड़ी और ग्रामीण जीवन की विवशता, दर्द और संघर्ष को सहानुभूति के साथ व्यक्त किया गया है। इस कारण जोशी जी हमारे मर्म को स्पर्श करने में सक्षम हैं। आपके कथानायकों को अपने परिवेश से प्रेम और इसलिए वे उससे जुड़े रहना चाहते हैं इस कारण जब वे प्रवासी होकर अपने परिवेश से अलग हो जाते हैं तब उनमें अपने परिवेश से पुनः न जुड़ पाने की पीड़ा का अंत नहीं होता है। 'मेरा पहाड़' कहानी संग्रह में संकलित प्रायः सभी कहानियों की रचनात्मकता के केंद्र में यह बात परिलक्षित होती है।

'नौरंबी बीमार है' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में ग्रामीण जीवन के साथ–साथ कारखानों में काम करने वाले मजदूर और कारीगरों के शोषण का यथार्थ चित्रण किया। इस संकलन की 'नौरंगी बीमार है' कहानी हिंदी साहित्य की एक अमर रचना मान सकते हैं। आपकी समग्र कहानियों का मूल्यांकन करते हैं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिंदी कहानी में संवेदना और शिल्प के अंतःसंबंधों के सुरम्य रचना के साथ जीवन और समाज के सहज उन्नयन एवं परिवर्तनकारी दृष्टि के प्रति दायित्व बोध शेखर जोशी की कहानियों का प्राण तत्त्व है। शेखर जोशी की कहानियों के शिल्प की ओर ध्यान देते हैं तो हम महसूस करते है कि कथात्मक रचना में भाषा के सूक्ष्म उपयोग का उन जैसा आधुनिक बोध हिंदी कहानी में दुर्लभ है।

संदर्भ :

1.डॉ0सुरेंद्र चौधरी, हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ, पृ0 75
2.डॉ0नामवर सिंह, नई कहानी, पृ0 43
3. डॉ0नामवर सिंह, नई कहानी, पृ0 47
4.कमलेश्वर ,स्वातंत्र्योतर हिंदी कहानियाँ, भूमिका, पृ017
5.शेखर जोशी, 'मेरा पहाड़' कोसी का घटवार, पृ0 64
6.शेखर जोशी, 'मेरा पहाड़' कोसी का घटवार, पृ0 63
7..शेखर जोशी, 'मेरा पहाड़' कोसी का घटवार, पृ0 65
8..शेखर जोशी, 'मेरा पहाड़' कोसी का घटवार, पृ0 71
9..शेखर जोशी, 'मेरा पहाड़' दाज्यू, पृ0 12
10.राजेंद्र यादव, कहानी : स्वरूप और संवेदना, पृ0 115